

पाठ 4. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जीवन परिचय एवं साहित्यिक योगदान

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख स्तंभ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एक क्रांतिकारी कवि, उपन्यासकार, निबंधकार और पत्रकार थे। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना, मानवतावाद और समाज सुधार की भावना झलकती है।

जीवन परिचय (1896–1961)

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन

- जन्म: 21 फरवरी 1896 को बंगाल के मेदिनीपुर जिले में (वर्तमान पश्चिम बंगाल)।
- परिवार: पंडित रामसहाय त्रिपाठी के पुत्र। माता का नाम हेमरानी देवी था।
- शिक्षा: घर पर ही संस्कृत, बांग्ला और हिंदी की शिक्षा प्राप्त की।

व्यक्तिगत संघर्ष

- कम उम्र में ही माता-पिता का निधन हो गया।
- आर्थिक तंगी के बावजूद साहित्य साधना जारी रखी।

निधन

16 अक्टूबर 1961 को इलाहाबाद (प्रयागराज) में उनका निधन हो गया।

साहित्यिक योगदान

काव्य संग्रह

1. अनामिका (1923) – छायावादी शैली की प्रमुख कृति।
2. परिमल (1930) – "जूही की कली" जैसी प्रसिद्ध कविताएँ इसमें शामिल हैं।
3. गीतिका (1936) – गीतात्मक शैली का संग्रह।
4. तुलसीदास (1938) – खंडकाव्य।
5. कुकुरमुत्ता (1942) – प्रगतिवादी रचनाएँ।

उपन्यास एवं कहानियाँ

- अलका (1933) – उनका प्रसिद्ध उपन्यास।
- चोटी की पकड़ – प्रमुख कहानी संग्रह।

निबंध एवं आलोचना

- प्रबंध पद्य – निबंध संग्रह।
- रवींद्र कविता कानन – रवींद्रनाथ टैगोर की कविताओं पर आलोचना।

विशेषताएँ

- छायावाद एवं प्रगतिवाद के बीच सेतु।
- मुक्त छंद के प्रवर्तक – पारंपरिक छंदों से मुक्ति दिलाई।
- समाजवादी विचारधारा – गरीबों, शोषितों के प्रति संवेदना।

भाषा शैली

- ओजस्वी भाषा – संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग।
- प्रतीकात्मकता – प्रकृति और मानवीय भावनाओं का सुंदर चित्रण।

उपसंहार

निराला जी ने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी। उनकी कविताएँ आज भी प्रासंगिक हैं और युवाओं को प्रेरित करती हैं। उनका साहित्य मानवीय मूल्यों, स्वतंत्रता और समानता का संदेश देता है।

प्रश्न अभ्यास

उत्साह

प्रश्न 1. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों?

उत्तर 1

- कवि बादल से न तो फुहार, रिमझिम, और न ही बरसने की बात करता है। ऐसा इसलिए क्योंकि यदि वह ऐसा कहता, तो इससे यह धारणा बनती कि वह बादल के कोमल और शांत स्वरूप का वर्णन करते हुए उसकी प्रशंसा कर रहा है।
- इस कविता में कवि बादल से गरजने की अपील करता है। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि वह बादल के माध्यम से नए कवियों को प्रेरित करना चाहता है। वह चाहता है कि कवि अपनी रचनाओं में क्रांति और चेतना का प्रभाव डालें, जैसे बादल की गर्जना में उग्रता और ऊर्जा होती है।

प्रश्न 2. कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा गया है?

उत्तर 2: कविता के शीर्षक 'उत्साह' को रखने के पीछे निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं:

1. बादलों के गरजने का आह्वान:
कवि ने बादलों से उनके मोहक स्वरूप से परे, उनके उत्साहजनक और सशक्त पक्ष को प्रदर्शित करने का आह्वान किया है। गरजने का आग्रह उनके ऊर्जावान स्वरूप को उजागर करता है।
2. कवियों में प्रेरणा का संचार:
कविता में कवि ने नूतन कवियों को अपने हृदय में बिजली की छवि बनाए रखने और क्रांति की चेतना को प्रकट करने का आह्वान किया है। यह उन्हें नई और प्रेरणादायक रचनाएँ करने के लिए उत्साहित करता है।
3. ऊर्जावान लेखन की प्रेरणा:
कवि ने कवियों को अपनी रचनाओं में विद्युत (उर्जा) भरने के लिए कहा है, जिससे उनकी कविताएँ उत्साहपूर्ण और प्रेरणादायक बन सकें।
4. लोक-कल्याण का संदेश:
बादलों से यह आग्रह किया गया है कि वे बरसकर धरती को शीतलता प्रदान करें और व्याकुल मानवता की पीड़ा को दूर करें। यह लोक-कल्याण के प्रति उनकी भूमिका को उजागर करता है।
5. उत्साह का प्रतीक:
कविता में बादलों और कवियों दोनों को क्रियाशील, सशक्त और प्रेरक बनने का संदेश दिया गया है। यह संदेश 'उत्साह' को शीर्षक के रूप में उपयुक्त बनाता है।

प्रश्न 3. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

उत्तर 3 कविता 'उत्साह' में बादल के प्रतीकों और अर्थों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है:

- असीम बलशाली शक्ति: बादल को घने और पूरे आकाश को ढक लेने वाले रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो असीम शक्ति और सामर्थ्य का प्रतीक है।
- उत्साह का प्रतीक: कवि ने गरजते हुए बादल को उत्साह और जोश के रूप में दर्शाया है।
- क्रांति और चेतना: इस कविता में बादल उन नूतन रचनाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो विप्लव, विध्वंस और क्रांति का संदेश देते हैं।
- परोपकारी स्वभाव: बादल पीड़ित और प्यासे जनों की आकांक्षाओं को पूर्ण करने वाले परोपकारी रूप में भी प्रस्तुत है।
- अनंत सत्ता का वाहक: बादल को अनंत और दिव्य शक्ति का संदेशवाहक भी माना गया है।

प्रश्न 4. शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे कविता के किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद-सौंदर्य कहलाता है। 'उत्साह' कविता में ऐसे कौन-से शब्द हैं जिनमें नाद-सौंदर्य मौजूद हैं, छाँटकर लिखें।

उत्तर 4:

1. "घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!"
 - यहाँ 'घेर' और 'घोर' शब्द ध्वन्यात्मकता को बढ़ाते हैं।
2. "दलिन ललित, काले घुँघराले,"

- 'ललित' और 'घुँघराले' शब्द कविता को लयात्मक बनाते हैं।
3. "विकल विकल, उन्मन थे उन्मन"
- 'विकल' और 'उन्मन' शब्द भावनाओं को गहराई से व्यक्त करते हैं।

इन पंक्तियों के माध्यम से नाद-सौंदर्य का अनुभव स्पष्ट होता है, जो पाठक के मन में चित्रात्मकता और संगीतात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 5. जैसे बावल उमड़-घुमड़कर बारिश करते हैं वैसे ही कवि के अंतर्मन में भी भावों के बादल उमड़-घुमड़कर कविता के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। ऐसे ही किसी प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर अपने उमड़ते भावों को कविता में उतारिए ।

उत्तर 5: फागुन की छटा
कोयल की मधुर तान पर
मन में जागे नये अरमान,
तरुण बसंत के आगमन संग
भर आया नवसृजन का सामान।

फूलों की गंध से महके उपवन,
हर कोना सजा प्रकृति के गहनों से,
चमेली, गुलाब, और अमराइयों का
हर वृक्ष बना मनमोहक गहने से।

सुबह की सुनहरी किरणें
धरा को देती सुनहरी आभा,
और मंद-मंद बहती हवा
ले आई मादकता की परिभाषा।

सरिता लाल चूनर ओढ़
दिखती नववधू-सी प्यारी,
कलियों के गाल चूम मधुप
गाते अपनी मादक कारी।

हर कोना सजीव हो उठा,
बांध दिया फागुन का रस,
तन-मन में छा गया वासंती रंग
प्रकृति का अनुपम उल्लास।

यह कविता प्राकृतिक सौंदर्य और उमंगों से भरी है, जिसे पढ़कर पाठक भी उस मौसम के सजीव अनुभव में खो जाएं।

पाठेतर सक्रियता

- बादलों पर अनेक कविताएँ हैं। कुछ कविताओं का संकलन करें और उनका चित्रांकन भी कीजिए।

उत्तर-

(1) मेघ आए

मेघ आए बड़े बन ठन के सँवर के।
आगे आगे नाचती गाती बयार चली।
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली।
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के ।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के ।
बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की।
'बरस बाद सुधि लीन्हीं'
बोली अकुलाई लता ओट हो किंवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
क्षितिज अटारी गहराई दामिनि दमकी,
क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की',
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के ।

- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(2) घन-कुरंग

नभ में चौकड़ियाँ भरें भले
शिशु घन-कुरंग
खिलवाड़ देर तक करें भले
शिशु घन-कुरंग
लो, आपस में गुँथ गए खूब
शिशु घन- कुरंग
लो, घटा जाल में गए डूब
शिशु धन-कुरंग
लो. बूँदें पड़ने लगीं, वाह
शिशु घन- कुरंग
लो. कब को सुधियाँ जमीं, वाह
शिशु घन-कुरंग
पुरवा सिंहको फिर दीख गए
शिशु धन-कुरंग
शशि से शरमाना सीख गए
शिशु घन-कुरंग

- नागार्जुन

(3) बादल - राग

झूम-झूम मृदु गरज - गरज घन घोर !

राग - अमर! अंबर में भर निज रोर !
झर झर झर निर्झर - गिरि-सर में
घर, मरु, तरु- मर्मर, सागर में,
सरित तडित-गति चकित पवन में,
मन में, विजन-गहन-कानन में,
आनन-आनन में, रव-घोर-कठोर
राग- अमर! अंबर में भर निज रोर!

अरे वर्ष के हर्ष!

बरस तू बरस बरस रसधार!
पार ले चल तू मुझको.
बहा, दिखा मुझको भी निज
गर्जन- गौरव-संसार!
उथल-पुथल कर हृदय-
मचा हलचल-
चल रे चल,
मेरे पागल बादल!
धँसता दलदल,
हँसता है नद खल-खल
बहता, कहता कुलकुल कलकल कलकल ।
देख-देख नाचता हृदय
बहने को महाविकल-बेकल,
इस मरोर से इसी शोर से-
सघन घोर गुरु गहन रोर से
मुझे गगन का दिखा सघन वह छोर !
राग - अमर! अंबर में भर निज रोर !

-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

अट नहीं रही है

प्रश्न 1. छायावाद की एक खास विशेषता है अंतर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है? लिखिए।

उत्तर 1:

"कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम,
पर-पर कर देते हो।"

प्रश्न 2. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

उत्तर 2:

- फागुन के महीने में प्रकृति अपनी अद्भुत सुंदरता से भरपूर हो जाती है, जो हर किसी का मन मोह लेती है।

- फागुन की सुगंधित हवा के साथ धरती का हर कोना खुशियों और उत्साह से झूम उठता है।
- कवि जिस भी दृश्य को देखता है, वह उसे कल्पनाओं की रंगीन दुनिया में ले जाता है।
- फागुन की सुंदरता इतनी अद्वितीय और व्यापक है कि हर चीज़ उसमें सराबोर लगती है।
- इसकी मोहकता ने जैसे कवि की आँखों पर जादू कर दिया है, जिससे वह इस सौंदर्य से नज़रें नहीं हटा पाता।

प्रश्न 3. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है?

उत्तर 3: 'अट नहीं रही है' कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता को विभिन्न रूपों में दर्शाया है, जो निम्नलिखित हैं:

1. फागुन का सर्वव्यापी सौंदर्य:
कवि ने यह चित्रित किया है कि फागुन का सौंदर्य इतना व्यापक है कि उसकी कांति और सुगंध सर्वत्र फैली हुई है, फिर भी वह पूरी तरह समा नहीं पा रही है।
2. धरती का सौंदर्यपूर्ण परिवेश:
फागुन की मादक हवा के स्पर्श से धरती का हर कण सुंदरता और जीवन से भर उठता है।
3. कल्पनाओं में विचरण:
फागुन के इस अद्वितीय सौंदर्य का प्रभाव मनुष्य के हृदय और विचारों पर ऐसा पड़ता है कि मन कल्पनाओं की उड़ान भरने लगता है।
4. प्रकृति का रंग-बिरंगा रूप:
पेड़ों की डालियाँ नई पत्तियों और फूलों से सज जाती हैं। कहीं वे हरी तो कहीं लाल नजर आती हैं, और कुछ पेड़ फूलों की माला धारण कर प्रकृति को और मनमोहक बना देते हैं। इस प्रकार, चारों ओर सौंदर्य ही सौंदर्य बिखरा रहता है।

इस कविता में कवि ने प्रकृति के अप्रतिम सौंदर्य और उसकी व्यापकता को अत्यंत सरल और हृदयस्पर्शी शब्दों में प्रस्तुत किया है।

प्रश्न 4. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

उत्तर 4

फागुन का महीना प्रकृति में एक अनोखा परिवर्तन लाता है, जो अन्य ऋतुओं से बिल्कुल अलग होता है। इसके कुछ विशेष पहलू निम्नलिखित हैं:

1. पेड़-पौधों का सौंदर्य – फागुन में पेड़-पौधों पर नए पत्ते उग आते हैं। पतझड़ के बाद इस मौसम में हरे और लाल रंग के पत्तों से पेड़ सज जाते हैं। फूलों की बहार इस समय विशेष रूप से देखने को मिलती है, जो अन्य ऋतुओं में कम ही होती है।

2. सुगंधित पवन – फागुन की हवाएं हर दिशा में ताजगी और ऊर्जा का संचार करती हैं। इन हवाओं से वातावरण में एक अद्भुत सुगंध फैल जाती है, जिससे हर कोई उल्लसित महसूस करता है। ऐसा ताजापन और शांति किसी अन्य ऋतु में अनुभव नहीं होता।
3. पक्षियों का उल्लास – फागुन आते ही आकाश में पक्षियों की चहचहाहट सुनाई देती है। विशेष रूप से कोयल की मीठी बोली से वातावरण में संगीत सा महसूस होता है। यह उल्लासपूर्ण वातावरण मानव मन को भी रचनात्मकता की ओर प्रेरित करता है।
4. सुहावना मौसम – इस महीने का मौसम न तो अत्यधिक गर्म होता है और न ही ठंडा। आकाश साफ होता है और वातावरण एकदम शांत एवं ताजगी से भरा होता है। यह मौसम अन्य ऋतुओं के मुकाबले अधिक सुखद और आनंददायक लगता है।
5. मादक वातावरण – फागुन में हवा में फूलों की भीनी-भीनी खुशबू और प्रकृति की सुंदरता से वातावरण मादक सा बन जाता है। यह विशेषता अन्य ऋतुओं में देखने को नहीं मिलती, जिससे सभी का मन प्रसन्न हो जाता है।

इस तरह, फागुन का महीना विशेष रूप से प्रकृति के हर रूप में सुंदरता और ताजगी का अहसास कराता है।

प्रश्न 5. इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर 5 निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ

भाव-पक्ष

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' छायावादी काव्य-धारा के महत्वपूर्ण कवि हैं। उनके काव्य में छायावाद की सभी विशेषताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। उनके कविता में भावनाओं की गहराई, कोमलता और मानसिक उतार-चढ़ाव का चित्रण मिलता है। विशेष रूप से शापितों और पीड़ितों के प्रति उनकी सहानुभूति काव्य को एक गहरी अर्थवत्ता प्रदान करती है। निराला के काव्य में विद्रोह, प्रेम, प्रकृति की अपूर्व छटा और सामाजिक न्याय की बातें प्रमुख हैं। वे शोषित वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति दर्शाते हुए, शोषक वर्ग और सत्ता के खिलाफ अपने विरोध को व्यक्त करते हैं।

कला-पक्ष और भाषा-शैली

निराला की भाषा सरल, परंतु प्रभावशाली है। उनका साहित्यिक भाषा का प्रयोग खड़ी बोली है, जिसमें संस्कृत, बंगला और फारसी का मिश्रण मिलता है। यह भाषा कभी सहज होती है, तो कभी संस्कृत से प्रभावित होकर कठिन। उनका लेखन भावनाओं से ओत-प्रोत होता है, जो पाठक के मन में गहरे असर छोड़ता है। इसके साथ ही, निराला की भाषा में ओज और शक्ति की भी भरपूरता है। कभी-कभी, उनकी शैली में शब्दों की कमी और क्रियापदों का अभाव भी देखा जाता है।

छंद-विधान

निराला जी को छंदमुक्त काव्य के प्रवर्तक के रूप में पहचाना जाता है। उन्होंने कविता को छंदों के बंधन से मुक्त

करने का साहस किया। हालांकि, वे छंदबद्ध कविताएँ भी लिखते थे। उर्दू के लोकप्रिय छंदों का उपयोग करते हुए, उन्होंने हिंदी में गजलों की रचनाएँ भी की हैं।

ध्वन्यात्मकता और प्रतीक

निराला की कविताओं में ध्वन्यात्मकता का विशेष स्थान है। उनकी कविताएँ संगीतात्मक गुण से भी संपन्न हैं, जिससे उनका काव्य सुनने में भी आकर्षक लगता है। "उत्साह" कविता इसका स्पष्ट उदाहरण है। उन्होंने प्रतीकों का अत्यधिक सुंदर और उपयुक्त प्रयोग किया है, जो उनके काव्य को और अधिक गहरा बनाता है।

बिम्ब-विधान और अलंकार

निराला के काव्य में चित्रमय बिम्बों का प्रयोग विशेष रूप से देखा जाता है, जैसे "आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन"। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अलंकारों का भी सुंदर उपयोग किया है। जैसे अनुप्रास अलंकार ("घेर घेर घोर"), उपमा अलंकार ("बाल कल्पना के-से काले"), और पुनरुक्ति अलंकार ("घेर-घेर", "पाट-पाट") का प्रयोग किया है।

इन विशेषताओं के माध्यम से निराला ने काव्य को एक नई दिशा दी और उसे आधुनिक कविता में उत्कृष्ट स्थान दिलाया।

प्रश्न 6. होली के आसपास प्रकृति में जो परिवर्तन दिखाई देते हैं, उन्हें लिखिए।

उत्तर 6 - होली का पर्व भारत में एक अत्यंत महत्वपूर्ण त्योहार है, जो न केवल रंगों और उल्लास के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह प्रकृति में भी कई परिवर्तन लाता है। होली के आस-पास की प्रकृति में कुछ विशेष बदलाव देखे जा सकते हैं:

1. वसंत ऋतु का आगमन: होली के समय वसंत ऋतु का समापन और ग्रीष्म ऋतु का आरंभ होता है। इस समय मौसम में हल्की ठंडक के साथ गर्मी का अनुभव होता है। हवा में ताजगी और नमी बनी रहती है, जिससे वातावरण में ताजगी महसूस होती है।
2. पौधों और फूलों का खिलना: होली के आसपास वृक्षों और पौधों में नए फूल खिलने लगते हैं। खासकर अमरुद, आम, और कचनार के पेड़ों पर रंग-बिरंगे फूलों का दृश्य बहुत आकर्षक होता है। यह फूल प्रकृति को सुंदर और जीवंत बना देते हैं।
3. प्रकृति में रंगों का विस्तार: होली का पर्व रंगों का पर्व है, और यह रंग न केवल मानव जीवन में बल्कि प्राकृतिक वातावरण में भी दिखाई देते हैं। फूलों और पत्तों के रंग में बदलाव, जैसे गुलाबी, पीले, और लाल रंग, पर्यावरण को और भी आकर्षक बना देते हैं।
4. पानी और हवा का बदलाव: होली के समय वातावरण में नमी और ठंडक बनी रहती है। इसके अलावा, इस समय पानी की उपलब्धता भी अधिक होती है क्योंकि वसंत ऋतु में बरसातें भी होती हैं, जिससे नदियाँ और झीलें भर जाती हैं।
5. प्राकृतिक जीवन का जागरण: होली के आसपास के समय में पक्षी अधिक चहचहाने लगते हैं और पशु-पक्षियों की सक्रियता बढ़ जाती है। यह समय उनके प्रजनन और गतिविधियों के लिए अनुकूल होता है।

इस प्रकार, होली के आसपास प्रकृति में रंग, उमंग, और ताजगी का अहसास होता है, जो जीवन में खुशियाँ और नयापन लाता है।

कविता "उत्साह" - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

बादल, गरजो!
घेर-घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित, ललित काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो—
बादल, गरजो!

विकल-विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!

तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो—
बादल, गरजो!

प्रसंग सहित व्याख्या

कविता अंश:

"बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!..."

प्रसंग:

यह पंक्तियाँ कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'उत्साह' से ली गई हैं। इस कविता में कवि ने बादलों को एक प्रेरणास्रोत और नवजीवन का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया है। वह बादलों से आग्रह करते हैं कि वे गरजें, बरसें और उत्साह जगाएँ।

व्याख्या:

कवि बादलों को पुकारते हुए कहते हैं कि हे बादलो! तुम गरजो, आकाश को घेरो और अपनी धारा से धरा को तर कर दो। वे बादलों की सुंदरता की सराहना करते हैं—उनकी ललित रूपरेखा, काले घुँघराले बालों जैसी शोभा, और उनमें छिपी विद्युत-शक्ति, कवि को नवजीवन से भर देती है।

कवि इसे नए विचारों, नई कविताओं और ऊर्जा का प्रतीक मानते हैं। वह चाहते हैं कि बादल जीवन में नई कविता, नयी प्रेरणा और क्रांति का वज्र बरसाएँ। वह कहते हैं कि तपते हुए, थके हुए संसार को अब शीतल जल चाहिए। बादल जैसे अज्ञात दिशा से आते हैं, वैसे ही उत्साह और नवचेतना भी किसी क्षण जीवन में आ सकती है।

भावार्थ:

यह कविता केवल प्राकृतिक वर्षा की नहीं, बल्कि आत्मिक जागरण, नवचेतना, संघर्ष और उत्साह की कविता है। यह बताती है कि विपरीत परिस्थितियों में भी हमें नवजीवन के लिए तैयार रहना चाहिए। जीवन में जब थकावट और निराशा छा जाए, तब भीतर से उठता उत्साह ही हमें नया जीवन देता है — जैसे सूखी धरती को वर्षा ताजगी देती है।

(पाठ 4. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर)

प्रश्न 1: कवि ने बादलों को किस रूप में प्रस्तुत किया है?

उत्तर: कवि ने बादलों को प्रेरणा, नवजीवन और उत्साह के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया है। वे बादलों से कहते हैं कि वे गरजें, बरसें और संसार को ऊर्जा और ठंडक दें।

प्रश्न 2: कविता 'उत्साह' में वर्षा का क्या प्रतीकात्मक अर्थ है?

उत्तर: इस कविता में वर्षा केवल जल नहीं बल्कि नवचेतना, काव्यशक्ति और जीवन में उत्साह का प्रतीक है। जैसे बादल धरती को शीतल करते हैं, वैसे ही नया उत्साह मन को ताजगी देता है।

प्रश्न 3: कविता 'उत्साह' में कवि ने बादलों को क्यों पुकारा है?

उत्तर: कविता 'उत्साह' में कवि ने बादलों को इसलिए पुकारा है क्योंकि वे धरती को ठंडक पहुँचाते हैं और जीवन में नई ऊर्जा भरते हैं। कवि चाहता है कि जैसे बादल आकाश को घेरकर बरसते हैं, वैसे ही हमारे जीवन में भी उत्साह की वर्षा हो और थके हुए मन को नवजीवन मिले।

प्रश्न 4: 'उत्साह' कविता में बादलों की सुंदरता का वर्णन कैसे किया गया है?

उत्तर: कवि ने बादलों को ललित और घुँघराले बालों के समान सुंदर बताया है। वे कहते हैं कि बादलों में नवजीवन की चमक है और उनमें वज्र जैसी शक्ति छिपी है। यह रूपक बादलों को न केवल प्राकृतिक रूप में बल्कि प्रेरणा और शक्ति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करता है।

प्रश्न 3: कविता 'उत्साह' में कवि ने वर्षा को किस भाव से जोड़ा है?

उत्तर: इस कविता में वर्षा को केवल जल की वर्षा नहीं, बल्कि सृजनात्मकता, प्रेरणा और आत्मिक ऊर्जा के रूप में दर्शाया गया है। कवि चाहता है कि वर्षा की तरह उत्साह भी जीवन में आए और दुखी, थके हुए लोगों को शांति और शक्ति प्रदान करे।

प्रश्न 4: कविता 'उत्साह' में 'वज्र छिपा, नूतन कविता' का क्या अर्थ है?

उत्तर: इस पंक्ति में कवि कहना चाहता है कि बादलों में जैसे बिजली और गर्जना छिपी होती है, वैसे ही हमारे भीतर नई कविता, नई शक्ति और उत्साह छिपा होता है। आवश्यकता है तो बस उसे जगाने और व्यक्त करने की। यह आंतरिक ऊर्जा का प्रतीक है।

प्रश्न 5: कविता 'उत्साह' किस प्रकार जीवन में सकारात्मक सोच को दर्शाती है?

उत्तर: 'उत्साह' कविता जीवन में नई सोच, शक्ति और उमंग का संदेश देती है। कवि कहते हैं कि जब जीवन में थकावट, तपन और निराशा हो, तब भी यदि भीतर उत्साह हो तो सब कुछ फिर से जी उठता है। यह कविता हमें आशा और आत्मबल का महत्व सिखाती है।

"अट नहीं रही है" (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की प्रसिद्ध कविता)

पद्यांश:

अट नहीं रही है,
आभा फागुन की तन,
सट नहीं रही है।

कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम,
पर-पर कर देते हो।

आँख हटाता हूँ तो,
हट नहीं रही है।

पत्तों से लदी डाल,
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में,
मंद-गंध-पुष्प-माल।

पाट-पाट शोभा-श्री,
पट नहीं रही है।

अट नहीं रही है" (सह-प्रसंग व्याख्या)

प्रसंग

यह कविता फागुन (वसंत ऋतु) के अद्भुत सौंदर्य और उसकी अतिरिक्त आभा का वर्णन करती है। निराला जी ने प्रकृति के माध्यम से मानवीय भावनाओं को अभिव्यक्त किया है। फागुन की मादकता, रंग-बिरंगे पत्ते, फूलों की सुगंध और हवा की मस्ती को कवि ने इस तरह चित्रित किया है कि वह सहन करना मुश्किल हो जाता है।

सन्दर्भ सहित व्याख्या

1. प्रथम पंक्तियाँ:

"अट नहीं रही है,
आभा फागुन की तन,
सट नहीं रही है।"

भावार्थ:

- फागुन (वसंत) की चमक (आभा) इतनी तीव्र है कि वह शरीर (तन) में समा नहीं पा रही।
- "अट" और "सट" शब्दों में अनुप्रास अलंकार है, जो कविता को लयबद्ध बनाता है।
- कवि कहता है कि फागुन की सुंदरता असहनीय हो गई है, मानो वह उसे छूकर गुजर रही हो।

2. द्वितीय भाग:

"कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम,
पर-पर कर देते हो।"

भावार्थ:

- वसंत की हवा (तुम) सजीव हो उठी है, मानो वह साँस ले रही हो।
- यह हवा हर घर में फैलकर उसे उल्लास से भर देती है।
- "पर-पर" शब्द से पक्षियों के पंख फड़फड़ाने की ध्वनि का भावचित्र उभरता है।
- मानवीकरण अलंकार – हवा को सजीव मानकर उससे संवाद किया गया है।

3. तृतीय भाग:

"आँख हटाता हूँ तो,
हट नहीं रही है।"

भावार्थ:

- कवि प्रकृति के सौंदर्य से इतना मोहित है कि वह आँखें हटाना चाहता है, पर वह दृश्य उसके मन से नहीं हटता।
- यहाँ विरह की भावना भी झलकती है – जैसे प्रकृति का मोह उसे छोड़ नहीं रहा।

4. चतुर्थ भाग:

"पत्तों से लदी डाल,
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में,
मंद-गंध-पुष्प-माल।"

भावार्थ:

- पेड़ों की डालियाँ हरे और लाल पत्तों से लदी हैं।
- "उर में" (हृदय में) फूलों की माला पड़ी है, जिसकी मंद गंध मन को मोह लेती है।
- रंगों और गंध का मनोहारी वर्णन छायावादी शैली को दर्शाता है।

5. अंतिम पंक्तियाँ:

"पाट-पाट शोभा-श्री,
पट नहीं रही है।"

भावार्थ:

- "पाट-पाट" (हर तरफ) प्रकृति की शोभा (सौंदर्य) फैली हुई है।
- यह शोभा इतनी अधिक है कि उसे ढकना (पट देना) संभव नहीं।
- दृश्य बिंब – पाठक के मन में वसंत का जीवंत चित्र उभरता है।

काव्यगत विशेषताएँ

1. छायावादी प्रवृत्ति – प्रकृति और मन के भावों का गहरा संबंध।
2. मुक्त छंद – पारंपरिक छंदों से मुक्ति।
3. अलंकार योजना – अनुप्रास ("पाट-पाट"), मानवीकरण ("साँस लेते हो")।
4. संगीतात्मकता – "पर-पर", "पट-पाट" जैसे शब्दों से लयबद्धता।
5. प्रतीकात्मकता – फागुन का सौंदर्य जीवन के उल्लास का प्रतीक है।

निष्कर्ष

निराला जी की यह कविता प्रकृति के प्रति गहरी संवेदनशीलता को दर्शाती है। फागुन की मादकता, रंगीन पत्ते, फूलों की सुगंध और हवा की मस्ती को कवि ने इतने सजीव शब्दों में पिरोया है कि पाठक भी उस आनंद में डूब जाता है। यह कविता छायावाद की श्रेष्ठतम रचनाओं में से एक है।

"अट नहीं रही है" कविता पर महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1: कविता का मुख्य भाव क्या है?

उत्तर: इस कविता में फागुन (वसंत ऋतु) के मनमोहक सौंदर्य का वर्णन किया गया है। कवि ने प्रकृति की सजीवता, रंग-बिरंगे पत्तों, फूलों की सुगंध और हवा की मस्ती को इस तरह चित्रित किया है कि वह सहन करना मुश्किल हो जाता है।

प्रश्न 2: "अट नहीं रही है" और "सट नहीं रही है" पंक्तियों का क्या अर्थ है?

उत्तर:

- "अट नहीं रही है" → फागुन की आभा (चमक) इतनी प्रखर है कि वह शरीर में समा नहीं पा रही।
- "सट नहीं रही है" → प्रकृति का सौंदर्य इतना निकट है कि लगता है वह छूकर गुजर रही है, पर पूरी तरह स्पर्श नहीं कर पा रही।

प्रश्न 3: "पर-पर कर देते हो" पंक्ति में कौन-सा अलंकार है? इसका क्या प्रभाव है?

उत्तर:

- अनुप्रास अलंकार ("पर-पर" शब्द की आवृत्ति)।
- प्रभाव: यह पंक्ति पक्षियों के पंख फड़फड़ाने की ध्वनि का बिंब खड़ा करती है, जिससे वसंत की हवा की गतिशीलता स्पष्ट होती है।

प्रश्न 4: "आँख हटाता हूँ तो, हट नहीं रही है" – इस पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर: कवि प्रकृति के सौंदर्य से इतना मोहित है कि वह आँखें फेरना चाहता है, पर वह दृश्य उसके मन से नहीं हटता। यहाँ मन के आकर्षण और विरह की भावना झलकती है।

प्रश्न 5: कविता में फागुन के सौंदर्य को किन-किन रूपों में दर्शाया गया है?

उत्तर:

- रंगों के माध्यम से: "कहीं हरी, कहीं लाल" पत्तियाँ।

- गंध के माध्यम से: "मंद-गंध-पुष्प-माल"।
- ध्वनि के माध्यम से: "पर-पर" (पक्षियों के उड़ने की आवाज)।
- स्पर्श के माध्यम से: हवा का "घर-घर भर देते हो"।

प्रश्न 6: निराला की इस कविता में छायावाद की कौन-सी विशेषताएँ दिखती हैं?

उत्तर:

- प्रकृति का मानवीकरण ("साँस लेते हो")।
- गहन भावनात्मकता (प्रकृति से जुड़ाव)।
- मुक्त छंद का प्रयोग।
- रहस्यमयता (फागुन की आभा को 'अट नहीं रही' कहना)।

प्रश्न 7: कविता की अंतिम पंक्तियाँ "पाट-पाट शोभा-श्री, पट नहीं रही है" का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इसका अर्थ है कि चारों ओर फैली प्रकृति की शोभा इतनी विशाल और मनोहर है कि उसे ढकना संभव नहीं। यह सौंदर्य अत्यंत विस्तृत और अद्भुत है, जिसे छिपाया नहीं जा सकता।

प्रश्न 8: निराला ने इस कविता में किस तरह की भाषा शैली का प्रयोग किया है?

उत्तर:

- छायावादी शैली – प्रतीकात्मक और कल्पनाप्रधान भाषा।
- संस्कृतनिष्ठ शब्दावली ("आभा", "शोभा-श्री")।
- मुक्तक छंद – कोई निश्चित तुक या लय नहीं।
- ध्वन्यात्मकता ("पर-पर", "पाट-पाट")।

प्रश्न 9: कविता का शीर्षक "अट नहीं रही है" क्यों उपयुक्त है?

उत्तर: शीर्षक उपयुक्त है क्योंकि यह कवि की अतृप्त इच्छा को दर्शाता है। फागुन का सौंदर्य इतना अधिक है कि वह उसे पूरी तरह अनुभव नहीं कर पा रहा, मानो वह उसके हृदय में समा नहीं पा रहा।

प्रश्न 10: इस कविता से हमें क्या संदेश मिलता है?

उत्तर: इस कविता का संदेश है कि प्रकृति का सौंदर्य असीमित है और मनुष्य उसे पूरी तरह ग्रहण नहीं कर सकता। हमें प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करके जीवन के उल्लास को महसूस करना चाहिए।